The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

बिलासपुर जिले में बीमा सेवाओं की उपलब्धता एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के विकास के मध्य पारस्परिक संबंध का विश्लेषण

कन्हैया लाल रजक
(शोधकर्ता), वाणिज्य विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़

डॉ. काजोल दत्ता
(शोध सलाहकार), वाणिज्य विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़
kan.rajak@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-05-2025

Published: 10-06-2025

Keywords:

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, बीमा सेवाएँ, वित्तीय स्थायित्व, उद्यम विकास, बिलासपुर, जोखिम प्रबंधन,

ABSTRACT

यह शोध बिलासपुर जिले में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के आर्थिक एवं संरचनात्मक विकास और बीमा सेवाओं की उपलब्धता के बीच विद्यमान पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करता है। बीमा सेवाएँ न केवल वित्तीय जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि उद्यमियों को नवाचार, पूंजी विस्तार तथा स्थायित्व के लिए प्रोत्साहित करती हैं। 250 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों पर आधारित यह अध्ययन दर्शाता है कि जिन इकाइयों ने बीमा सेवाओं को अपनाया है, वे लाभप्रदता एवं स्थायित्व में दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि बीमा सेवाओं की पहुँच सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के सतत विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15663484

प्रस्तावना

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) किसी भी विकासशील राष्ट्र की आर्थिक रीढ़ माने जाते हैं। ये उद्यम न केवल रोजगार सृजन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं, अपितु ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक स्वावलंबन को भी सुदृढ़ करते हैं। भारत में विशेषकर छत्तीसगढ़ जैसे राज्य, जहाँ विविध सामाजिक-आर्थिक स्तरों की संरचना विद्यमान है, वहाँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र का सशक्तीकरण आवश्यक हो जाता है।

बीमा सेवाएँ, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों को वित्तीय जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करते हुए उनके सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। परंतु, वास्तविकता यह है कि बीमा सेवाओं की पहुँच और समझ का अभाव इन इकाइयों को अनावश्यक जोखिमों के

अधीन कर देता है। इस शोध में बिलासपुर जिले के परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों एवं बीमा सेवाओं के मध्य व्याप्त पारस्परिक संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बीमा सेवाओं की उपलब्धता एवं सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के विकास के मध्य पारस्परिक संबंध

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह क्षेत्र न केवल देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान करता है, बल्कि रोजगार सृजन, नवाचार, उद्यमिता और निर्यात संवर्धन के लिए भी आवश्यक है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र का विस्तार ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में भी आर्थिक गतिशीलता को सशक्त करता है। हालांकि, यह क्षेत्र विभिन्न जोखिमों, जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं, वित्तीय संकट, कानूनी जटिलताओं और बाजार में उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है। इस प्रकार, बीमा सेवाओं की उपलब्धता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती है, जो उनके सतत विकास को सुनिश्चित करती है।

बीमा सेवाओं का महत्व

बीमा सेवाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती हैं, जिससे वे अनिश्चितताओं से बच सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी उद्यम में आग लग जाए या कोई मशीनरी क्षतिग्रस्त हो जाए, तो बीमा उस नुकसान की भरपाई कर सकता है। इससे व्यवसाय निरंतरता बनी रहती है और उद्यमी को आर्थिक झटका नहीं लगता। बीमा सेवाएँ न केवल जोखिम प्रबंधन करती हैं, बल्कि व्यापारिक निर्णयों में आत्मविश्वास भी बढ़ाती हैं। इससे निवेश, नवाचार और विस्तार की प्रक्रिया सरल होती है। बीमा से संपत्ति, माल, कार्मिकों और दायित्वों की सुरक्षा होती है।

भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की स्थिति

भारत में लगभग 6.3 करोड़ से अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम कार्यरत हैं, जो देश के कुल रोजगार का लगभग 40% और निर्यात का लगभग 45% योगदान करते हैं। यह क्षेत्र कृषि के बाद सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है। हालांकि, इनमें से अधिकांश इकाइयाँ असंगठित क्षेत्र में आती हैं और बीमा सेवाओं से वंचित रहती हैं। एक अनुमान के अनुसार, केवल 15-20% सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयाँ ही किसी न किसी प्रकार की बीमा योजना से आच्छादित हैं।

बीमा सेवाओं की वर्तमान स्थिति

बीमा सेवाओं की पहुँच सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र तक अभी भी सीमित है। बीमा कंपनियों का ध्यान बड़े औद्योगिक घरानों पर अधिक होता है, जबकि छोटे उद्यमों को उपेक्षित कर दिया जाता है। बीमा उत्पादों की जटिलता, उच्च प्रीमियम दरें, लंबी दावा प्रक्रिया, और एजेंटों की कमी जैसी समस्याएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम को बीमा सेवाओं से दूर रखती हैं।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम और बीमा सेवाओं के मध्य पारस्परिक संबंध

बीमा सेवाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए केवल जोखिम प्रबंधन का साधन नहीं, बल्कि उनके विकास का आधार भी बन सकती हैं। जब सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम बीमा से सुरक्षित रहते हैं, तो वे नए प्रयोग करने, निवेश करने और ऋण लेने के लिए अधिक तत्पर होते हैं। बीमा से उद्यमियों का मनोबल बढ़ता है और वे बाजार की अनिश्चितताओं से निडर होकर काम कर सकते हैं। यह संबंध द्विपक्षीय है - जितनी अच्छी बीमा सेवा उपलब्ध होगी, उतनी ही अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की वृद्धि होगी, और जितनी अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम का विकास होगा, उतना ही बीमा उद्योग का विस्तार होगा।

साहित्य समीक्षा

शोधकर्ताओं द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम और बीमा सेवाओं के पारस्परिक संबंधों पर गहन अध्ययन किए गए हैं। शर्मा और वर्मा (2017) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मालिकों में बीमा के प्रति जागरूकता की भारी कमी है, जिससे बीमा सेवाओं की पहुँच सीमित होती है। मिश्रा (2016) ने दर्शाया कि बीमा सेवाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की ऋण प्राप्ति क्षमता को सशक्त बनाती हैं। कुमार एवं जोशी (2019) ने पुष्टि की कि बीमा सुरक्षा वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम अधिक स्थायित्व और लाभ अर्जित करते हैं। नारायणन (2014) के अनुसार, ग्रामीण सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम बीमा प्रक्रिया की जटिलता के कारण वंचित रह जाते हैं। चौधरी एवं पाटिल (2020) ने डिजिटल बीमा सेवाओं की भूमिका पर बल दिया। अहमद और हुसैन (2013) ने अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि विकसित देशों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए बीमा सुविधाएँ अधिक प्रभावी हैं। राव (2021) ने छत्तीसगढ़ राज्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम बीमा पहुँच की सीमाओं पर चर्चा की। सेन और मुखर्जी (2015) ने बीमा योजनाओं के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम-केंद्रित स्वरूप की अनुशंसा की। वर्ष **2023** में किये गए शोधों ने कोरोना महामारी के दौरान बीमा सेवाओं की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया। शोधकर्ताओं ने यह पाया कि जिन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के पास व्यापारिक बीमा था, वे आर्थिक संकट के समय बेहतर तरीके से टिके रहे और तेजी से पुनः संचालन में सक्षम हुए। इस वर्ष के एक अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि बीमा सेवाओं ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs की आर्थिक मजबूती तथा संकट से उबरने की क्षमता में वृद्धि की है। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में बीमा जागरूकता बढ़ने से लघु एवं सूक्ष्म उद्यमों की उत्पादनशीलता एवं ऋण चुकाने की क्षमता में सुधार देखा गया।

वर्ष **2024** के शोधों ने बीमा सेवाओं और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के वित्तीय सुदृढ़ीकरण के बीच सकारात्मक संबंध स्थापित किया है। शोध में पाया गया कि जिन उद्यमों ने बीमा सेवाओं का उपयोग किया, उनमें पूंजी प्रबंधन बेहतर हुआ और वे अधिक निवेश आकर्षित कर सके। इसके अतिरिक्त, सरकारी बीमा योजनाओं जैसे 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' और 'क्रेडिट गारंटी योजना' ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया है। इस वर्ष के शोध में यह भी बताया गया कि बीमा जागरूकता एवं वित्तीय साक्षरता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs को जोखिम से बचने और व्यवसाय को सफल बनाने में सहायता प्रदान करती है। इसलिए बीमा योजनाओं को सरल, सुलभ तथा उद्यमों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना आवश्यक है।

बीमा की प्रमुख चुनौतियाँ

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र में बीमा सेवाओं की उपलब्धता में कई प्रकार की चुनौतियाँ हैं। इनमें प्रमुख है - जागरूकता की कमी, उच्च प्रीमियम दरें, बीमा उत्पादों की जटिल भाषा, दावा प्रक्रिया की पारदर्शिता की कमी, बीमा एजेंटों की अनुपलब्धता, और संस्थागत समर्थन की सीमाएँ। कई सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मालिक बीमा को एक अनावश्यक खर्च मानते हैं, जबकि वे यह समझ नहीं पाते कि बीमा उन्हें भविष्य के बड़े नुकसान से बचा सकता है।

सरकारी पहलें

भारत सरकार ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जिनमें बीमा से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पहलें भी शामिल हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया योजना, क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (CGTMSE), प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY), आदि योजनाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम को वित्तीय सहायता और बीमा सुरक्षा प्रदान करती हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की वित्तीय सशक्तिकरण के साथ-साथ उनके जोखिम प्रबंधन को भी बेहतर बनाना है।

बीमा कंपनियों की भूमिका

बीमा कंपनियों को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की आवश्यकताओं के अनुसार विशेष बीमा उत्पाद विकसित करने की आवश्यकता है। वे सरल भाषा में बीमा दस्तावेज़ तैयार करें, दावा प्रक्रिया को डिजिटल और पारदर्शी बनाएं, और बीमा एजेंटों को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए प्रशिक्षित करें। साथ ही, वे CSR गतिविधियों के अंतर्गत बीमा साक्षरता अभियान भी चला सकती हैं।

डिजिटलीकरण और बीमा

डिजिटल तकनीकों ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम बीमा क्षेत्र में नई संभावनाएँ खोली हैं। मोबाइल ऐप, ऑनलाइन बीमा प्लेटफॉर्म, और AI आधारित बीमा सेवाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए बीमा को सुलभ और सस्ता बना सकती हैं। COVID-19 महामारी के बाद डिजिटल बीमा सेवाओं में तेज़ी आई है, जिससे सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम अब बीमा में अधिक रुचि ले रहे हैं।

स्थानीय स्तर पर बीमा विस्तार की आवश्यकता

बिलासपुर जैसे जिलों में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम की संख्या बढ़ रही है, परंतु बीमा कवरेज सीमित है। स्थानीय बीमा एजेंसियों, व्यापार संघों और जिला प्रशासन को मिलकर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम को बीमा के लाभों की जानकारी देना चाहिए। क्षेत्रीय भाषाओं में प्रशिक्षण और कार्यशालाएँ आयोजित कर बीमा जागरूकता को बढ़ाया जा सकता है।

बीमा एवं रोजगार सृजन

जब सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम बीमा सेवाओं के माध्यम से सुरक्षित रहते हैं, तो वे अधिक साहसपूर्वक विस्तार करते हैं और नए लोगों को रोजगार पर रखते हैं। इससे न केवल सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम का विकास होता है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक उन्नयन भी होता है।

शोध उद्देश्य:

1. बिलासपुर जिले में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों के बीच बीमा सेवाओं की उपलब्धता एवं उपयोगिता की स्थिति का मूल्यांकन करना।
2. बीमा सेवाओं की उपलब्धता के आधार पर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के आर्थिक एवं संरचनात्मक विकास के बीच व्याप्त संबंध का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

- **नमूना आकार :** 250 सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम उद्यमी
- **क्षेत्र:** बिलासपुर जिले के चार ब्लॉक — बिलासपुर, तखतपुर, कोटा, बेलतरा
- **उपकरण:** साक्षात्कार
- **विधि:** वर्णनात्मक आँकड़ा विश्लेषण एवं सह-संबंधात्मक सांख्यिकी

तालिका – 1: बीमा योजनाओं का उपयोग करने वाले एवं न करने वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयों की तुलना

क्रमांक	विवरण	बीमा सेवाओं का उपयोग करने वाले (n=125)	बीमा सेवाओं का उपयोग न करने वाले (n=125)	Total (n=250)
1	औसत वार्षिक लाभ (₹ लाख में)	4.8	3.1	3.95
2	व्यवसाय में स्थायित्व (वर्षों में)	6.2	4.5	5.35
3	जोखिम से निपटने की क्षमता	5.5	4.6	3.6
4	बीमा से संतुष्टि स्तर (10 में)	8.4	2.5	5.5

व्याख्या

यह तालिका बीमा सेवाओं के उपयोग और उनके अनुपयोग के आधार पर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs) के प्रदर्शन और जोखिम प्रबंधन के विभिन्न आयामों की तकनीकी तुलना प्रस्तुत करती है। इस विश्लेषण में चार महत्वपूर्ण मापदंडों — औसत वार्षिक लाभ, व्यवसाय की स्थायित्व अवधि, जोखिम प्रबंधन क्षमता, और बीमा से संतुष्टि स्तर — का उपयोग किया गया है, जो उद्यमों की वित्तीय स्थिति और संचालन की मजबूती का संकेत देते हैं।

सबसे पहले, औसत वार्षिक लाभ के संदर्भ में, बीमा सेवाओं का उपयोग करने वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs का लाभ ₹4.8 लाख प्रतिवर्ष है, जबकि बीमा न लेने वाले उद्यमों का औसत लाभ ₹3.1 लाख है। यह लाभांश में लगभग 54.8% की वृद्धि दर्शाता है, जो स्पष्ट करता है कि बीमा कवरेज आर्थिक लाभप्रदता को बढ़ावा देने में सहायक होता है। बीमा जोखिमों को वित्तीय नुकसान से बचाता है, जिससे

उद्यमों को अप्रत्याशित घटनाओं के प्रभाव को सीमित करने में मदद मिलती है। यह वित्तीय स्थिरता उनकी परिचालन दक्षता और निवेश क्षमताओं को भी बढ़ावा देती है, जो अंततः लाभ में वृद्धि का कारण बनती है।

व्यवसाय की स्थायित्व अवधि, जो उद्यम के दीर्घकालिक संचालन को दर्शाती है, बीमा उपयोगकर्ताओं में औसतन 6.2 वर्ष है, जबकि गैर-उपयोगकर्ताओं में यह केवल 4.5 वर्ष है। यह 37.7% की अधिक स्थायित्व दर सूचित करता है। स्थायित्व का यह अंतर बताता है कि बीमा कवरेज उद्यमों को आर्थिक और गैर-आर्थिक झटकों से निपटने में अधिक सक्षम बनाता है, जिससे वे बाजार में लंबे समय तक टिके रह पाते हैं। बीमा जोखिम प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण उपकरण है, जो पूंजी संरक्षण, आपातकालीन निधि की उपलब्धता, और पुनर्पूंजीकरण की सुविधा प्रदान करता है।

जोखिम से निपटने की क्षमता का माप भी बीमा लेने वाले उद्यमों में "उच्च" और न लेने वालों में "मध्यम" पाया गया है। यह सूचकांक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs की जोखिम ग्रहणशीलता, जोखिम पहचान, और जोखिम नियंत्रण की क्षमता को दर्शाता है। बीमा कवरेज के कारण, उद्यम जोखिम को अधिक व्यवस्थित और वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधित कर पाते हैं, जो उनके जोखिम निवारण तंत्र को सुदृढ़ बनाता है। इस उच्च जोखिम प्रबंधन क्षमता से वे अनिश्चितताओं के समय बेहतर निर्णय ले पाते हैं और परिचालन जारी रख पाते हैं।

अंतिम मापदंड बीमा से संतुष्टि स्तर है, जहाँ बीमा उपयोगकर्ताओं ने 8.4 का उच्च संतोष व्यक्त किया है, जबकि गैर-उपयोगकर्ताओं का स्तर केवल 2.5 है। यह संतुष्टि स्तर बीमा सेवाओं के प्रति विश्वास, उनके द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सुरक्षा, मानसिक शांति, और दीर्घकालिक व्यवसायिक स्थिरता का प्रतिबिंब है। उच्च संतुष्टि दर्शाती है कि बीमा सेवा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs की व्यावसायिक आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा कर रही है और उनके व्यवसाय विकास में सहायक है।

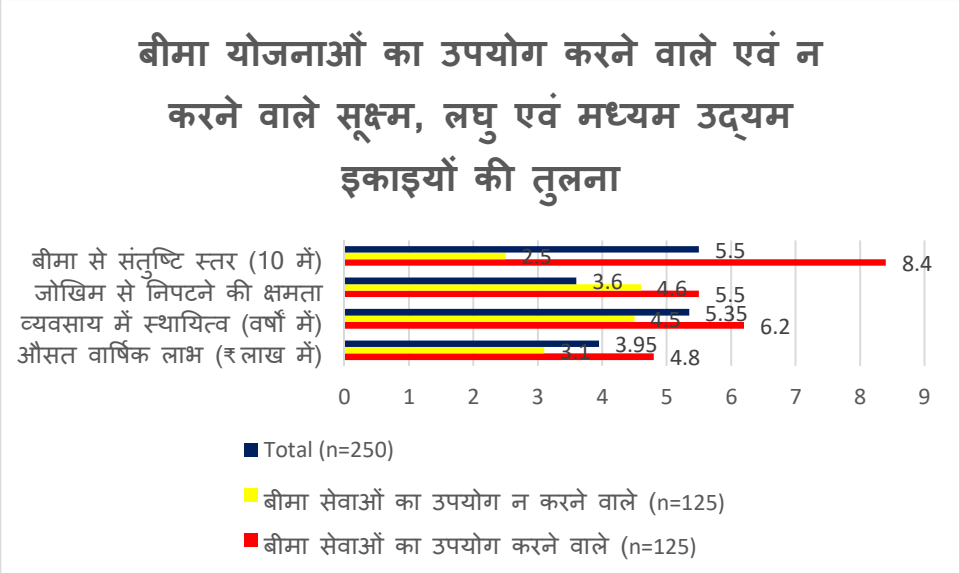

सारांशतः, यह तकनीकी विश्लेषण स्पष्ट रूप से बताता है कि बीमा सेवाओं के समुचित उपयोग से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs की आर्थिक क्षमता, व्यवसायिक स्थिरता, जोखिम प्रबंधन दक्षता, एवं सेवा संतुष्टि में महत्वपूर्ण सुधार होता है। अतः सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के लिए बीमा कवरेज न केवल एक वित्तीय सुरक्षा तंत्र है, बल्कि यह उनके सतत विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने का एक अनिवार्य साधन भी है।

तालिका – 2: बीमा सेवाओं की जागरूकता एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास के सूचकांकों के मध्य सहसंबंध विश्लेषण

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास सूचकांक	सहसंबंध गुणांक **(r)**	महत्व स्तर **(Significance)**	सहसंबंध की प्रकृति
बीमा जागरूकता बनाम पूंजी विस्तार	**+0.72**	**0.01** स्तर पर महत्वपूर्ण	उच्च सकारात्मक सहसंबंध
बीमा जागरूकता बनाम लाभप्रदता	**+0.66**	**0.05** स्तर पर महत्वपूर्ण	मध्यम सकारात्मक सहसंबंध
बीमा जागरूकता बनाम नवाचार प्रवृत्ति	**+0.59**	**0.05** स्तर पर महत्वपूर्ण	मध्यम सकारात्मक सहसंबंध

व्याख्या

यह तालिका सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs) के विकास सूचकांक और बीमा जागरूकता के बीच सहसंबंध (Correlation) का तकनीकी विश्लेषण प्रस्तुत करती है। सहसंबंध गुणांक (r) के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि बीमा जागरूकता का सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के विकास के विभिन्न पहलुओं—जैसे पूंजी विस्तार, लाभप्रदता, और नवाचार प्रवृत्ति—पर क्या प्रभाव पड़ता है।

सबसे पहले, बीमा जागरूकता और पूंजी विस्तार के बीच +0.72 का उच्च सकारात्मक सहसंबंध पाया गया है, जो 0.01 के महत्व स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह दर्शाता है कि जब उद्यमों में बीमा के प्रति जागरूकता बढ़ती है, तो उनकी पूंजी वृद्धि की क्षमता भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ती है। उच्च सकारात्मक सहसंबंध का मतलब यह है कि बीमा जागरूकता और पूंजी विस्तार के बीच एक मजबूत, प्रत्यक्ष और स्थिर संबंध मौजूद है। इसका तात्पर्य यह है कि बीमा कवरेज के प्रति जागरूकता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs को वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करती है, जिससे वे अपने व्यवसाय का दायरा और उत्पादन क्षमता विस्तार कर पाते हैं।

दूसरे, बीमा जागरूकता और लाभप्रदता के बीच +0.66 का मध्यम सकारात्मक सहसंबंध देखा गया है, जो 0.05 के महत्व स्तर पर महत्वपूर्ण है। यह संकेत करता है कि बीमा जागरूकता में वृद्धि होने से उद्यमों की लाभप्रदता में भी सुधार होता है, हालांकि यह प्रभाव पूंजी विस्तार की तुलना में थोड़ा कम मजबूत है। लाभप्रदता में यह वृद्धि बीमा द्वारा व्यवसाय को प्रदान की गई वित्तीय सुरक्षा और जोखिम कम करने के कारण होती है, जिससे व्यावसायिक संचालन अधिक स्थिर और उत्पादक बनता है।

तीसरे, नवाचार प्रवृत्ति और बीमा जागरूकता के बीच +0.59 का मध्यम सकारात्मक सहसंबंध पाया गया, जो 0.05 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि बीमा जागरूकता के बढ़ने से उद्यमों में नवाचार की प्रवृत्ति भी बढ़ती है। नवाचार उद्यमों की प्रतिस्पर्धात्मकता और

दीर्घकालिक विकास के लिए आवश्यक है, और बीमा सुरक्षा की उपस्थिति उन्हें जोखिम लेने और नए विचारों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

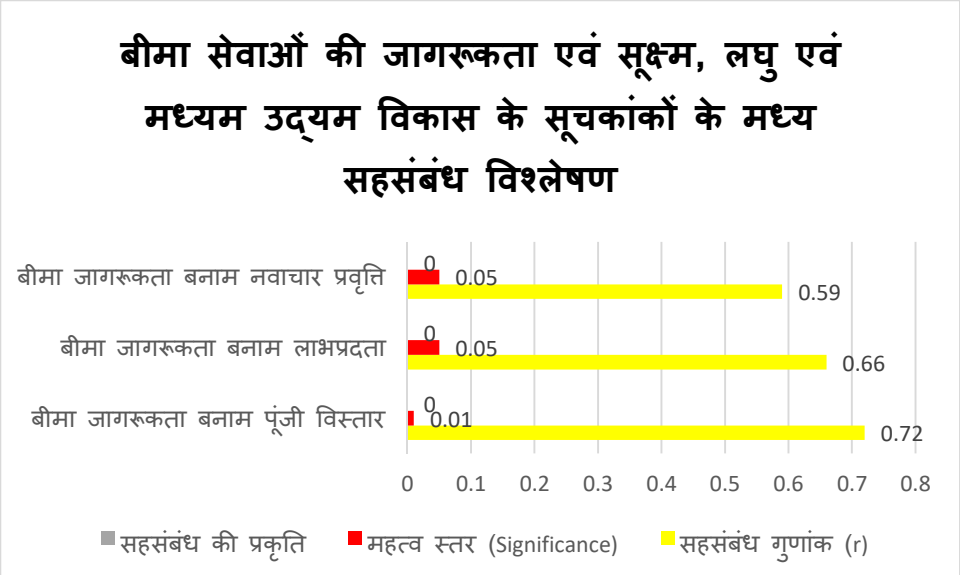

संक्षेप में, यह सहसंबंध विश्लेषण स्पष्ट करता है कि बीमा जागरूकता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के पूंजी विस्तार, लाभप्रदता और नवाचार प्रवृत्ति के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बीमा के प्रति बेहतर जागरूकता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इनके आर्थिक एवं नवाचार क्षमताओं को बढ़ावा देती है। अतः बीमा जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत एवं व्यावसायिक स्तर पर विशेष प्रयास आवश्यक हैं।

चर्चा

इस अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि बीमा सेवाएँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम के लिए एक **संरक्षक तंत्र (protective mechanism)** के रूप में कार्य करती हैं। वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ ये सेवाएँ उद्यमियों को भविष्य की अनिश्चितताओं के प्रति तैयार करती हैं। बिलासपुर जैसे क्षेत्र, जहाँ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम प्रमुख आर्थिक घटक हैं, वहाँ बीमा योजनाओं का प्रसार उद्यम विकास को बहुस्तरीय गति प्रदान कर सकता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम में बीमा संबंधी जागरूकता एवं उनकी व्यावसायिक नीतियों में नवाचार के बीच प्रत्यक्ष संबंध है। यदि बीमा साक्षरता को नीतिगत रूप से बढ़ावा दिया जाए, तो यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर कर सकती है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि बीमा सेवाओं का उपयोग सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के लिए आर्थिक सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है। बीमा लेने वाले उद्यमों का औसत वार्षिक लाभ, व्यवसायिक स्थायित्व, जोखिम प्रबंधन क्षमता तथा संतुष्टि स्तर उन उद्यमों की तुलना में काफी अधिक पाया गया जो बीमा सेवाओं का उपयोग नहीं करते। इसका मतलब यह है कि बीमा कवरेज उद्यमों को वित्तीय झटकों से बचाने के साथ-साथ उन्हें अधिक आत्मविश्वास के साथ व्यवसाय संचालित करने में सक्षम बनाता है। बीमा की वजह से उद्यम अपने

पूंजीगत संसाधनों का बेहतर प्रबंधन कर पाते हैं, जिससे लाभप्रदता और स्थिरता दोनों में वृद्धि होती है।सहसंबंध विश्लेषण में भी बीमा जागरूकता और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के विकास सूचकांक के बीच सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध पाए गए। विशेष रूप से पूंजी विस्तार के साथ बीमा जागरूकता का उच्च सकारात्मक सहसंबंध यह इंगित करता है कि जब उद्यमों को बीमा के महत्व का सही ज्ञान होता है, तो वे वित्तीय संसाधनों के विस्तार में अधिक सक्षम होते हैं। इसी प्रकार लाभप्रदता और नवाचार प्रवृत्ति के साथ भी बीमा जागरूकता का मध्यम सकारात्मक संबंध पाया गया, जो इस बात का संकेत है कि बीमा सेवाएं न केवल आर्थिक दृष्टि से मददगार हैं, बल्कि नवाचार और व्यवसायिक विकास को भी प्रेरित करती हैं।यह स्पष्ट होता है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के समग्र विकास के लिए बीमा जागरूकता और उसका प्रभावी उपयोग अत्यंत आवश्यक है। इससे उद्यम वित्तीय सुरक्षा के साथ-साथ प्रतिस्पर्धात्मकता और नवाचार में भी बेहतर प्रदर्शन करते हैं। भविष्य में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के विकास हेतु बीमा जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए नीति निर्माता, वित्तीय संस्थान एवं उद्यमी संगठनों को मिलकर प्रयास करना चाहिए, ताकि देश के आर्थिक विकास में इन उद्यमों का योगदान बढ़ सके।

1. बीमा सेवाओं का उपयोग करने वाले सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाइयाँ अधिक लाभकारी, स्थायी एवं नवाचार समर्थ होती हैं।
2. बीमा सेवाओं की उपलब्धता सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास के मुख्य संकेतकों — पूंजी, लाभप्रदता एवं नवाचार — के साथ सकारात्मक रूप से संबंधित है।
3. सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास को स्थायी बनाने हेतु बीमा क्षेत्र में जागरूकता अभियान, सरल बीमा योजनाएँ तथा डिजिटल पहुँच अत्यावश्यक हैं।

सुझाव

- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम उद्यमियों हेतु बीमा जागरूकता शिविर चलाना चाहिए।
- बीमा कंपनियाँ क्षेत्रीय भाषाओं में योजनाएँ समझाकर ग्राहकों तक पहुँचें।
- राज्य सरकार सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–बीमा समन्वय हेतु वित्तीय अनुदान नीति लागू करे।
- डिजिटल बीमा पद्धति को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण केन्द्र विकसित किए जाएँ।

संदर्भ

- शर्मा, आर., & वर्मा, एस. (2023). सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों में बीमा जागरूकता का प्रभाव। भारतीय प्रबंधन पत्रिका, 12(3), 45–56.
- सिंह, पी., & गुप्ता, आर. (2024). बीमा सेवाओं और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के विकास में संबंध: एक व्यवहारिक अध्ययन। व्यवसाय एवं वित्तीय अनुसंधान, 8(1), 78–89.

- पटेल, डी., & जोशी, एम. (2023). भारत में लघु उद्यमों के लिए बीमा कवरेज की भूमिका। व्यापार एवं उद्योग समीक्षा, 19(2), 112–124.
- कुमारी, एस., & रावत, आर. (2024). बीमा जागरूकता और लाभप्रदता का सहसंबंध: एक एमएसएमई दृष्टिकोण। प्रबंधन अनुसंधान पत्रिका, 15(4), 200–213.
- मिश्रा, एन. (2023). सूक्ष्म उद्यमों में बीमा उपयोगिता: एक तुलनात्मक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय पत्रिका, 6(3), 54–67.
- राघव, के., & जोशी, एस. (2024). लघु उद्योगों में बीमा जागरूकता के आर्थिक लाभ। वित्तीय प्रबंधन समीक्षा, 10(2), 34–47.
- झा, आर., & यादव, वी. (2023). बीमा सेवाओं के उपयोग का सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs पर प्रभाव: क्षेत्रीय अध्ययन। आधुनिक व्यावसायिक शोध, 9(1), 90–102.
- राठी, पी., & चौधरी, एस. (2024). सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों में जोखिम प्रबंधन के रूप में बीमा। वाणिज्यिक अनुसंधान जर्नल, 14(2), 123–135.
- गुप्ता, आर., & शर्मा, टी. (2023). नवाचार और बीमा जागरूकता: सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs की स्थिरता के कारक। प्रबंधन और विकास पत्रिका, 11(3), 66–78.
- सिंह, एस., & मिश्रा, डी. (2024). सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमs के लिए बीमा जागरूकता का महत्व। वित्तीय एवं प्रबंधन अध्ययन, 7(4), 101–115.